Coverage of Dheerpur wetlands

Dainik Jagran – 30.11.2020

सराहनीय | चार वर्ष पहले अंबेडकर विश्वविद्यालय ने शुरू की परियोजना, अब यहां आच्छादित होने लगीं वनस्पतियां और आने लगे प्रवासी पक्षी

धीरपुर गांव की बंजर भूमि में आज भी है पक्षियों का बसेरा

जागरण संवाददाता, बाहरी दिल्ली : कभी बंजर भूमि के रूप में दूर तक फैला दिल्ली के धीरपुर गांव का बड़ा भूभाग आज एक खूबसूरत और पर्यावरण के अनुकूल क्षेत्र के रूप में विकसित हो चुका है। करीब चार वर्ष पहले अंबेडकर विश्वविद्यालय की ओर से इस परियोजना की शुरुआत हुई और देखते ही देखते यह बंजर भूमि वनस्पतियों की सैकड़ों प्रजातियों से आच्छादित होने के साथ ही प्रवासी पक्षियों का डेरा बन गया है। मौजूदा वक्त में यहां 90 से अधिक प्रजातियों के पेड़-पौधे और 108 प्रकार के स्थानीय व प्रवासी पक्षियों का बसेरा है। अंबेडकर विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर अर्बन इकोलॉजी एंड सस्टेनेबिलिटी (सीयूईएस) के छात्रों और शिक्षकों ने यह कारनामा कर दिखाया है।

सीयूईएस के अनुसार पारिस्थितिकी तंत्र के संतुलन के लिए अंबेडकर विश्वविद्यालय ने दिल्ली विकास प्राधिकरण के सहयोग से इस परियोजना को शुरू किया था। उनके अनुसार सूक्ष्म जलवायु को नियंत्रित करने, जलीय और पक्षी जीवन के लिए आवास प्रदान करने और मिट्टी की गुणवत्ता व नमी को बनाए रखने जैसे विभिन्न पारिस्थितिक तंत्र के कार्यों को करने की आवश्यकता है। इसी उद्देश्य के तहत गोपालपुर गांव में धीरपुर वेटलैंड को विकसित किया गया। सेंटर फॉर अर्बन इकोलॉजी एंड सस्टेनेबिलिटी के (सीयूईएस) के निदेशक सुरेश बाबू ने बताया कि इस परियोजना की परिकल्पना की नींव वर्ष 2015 में ही पड़ गई थी। उस दौरान यह भूमि बिल्कुल बेजान और बंजर दिखाई देती थी। वर्ष 2016 में इसपर कार्य प्रारंभ हुआ और 25.8 हेक्टेयर भूमि को इसके लिए चिन्हित किया गया। शोध के छात्रों के अलावा यह लोगों के पर्यटन का मुख्य आकर्षण भी है। यहां आसपास की कॉलोनियों से लोग प्राकृतिक सौंदर्य को देखने आते हैं। इनमें मुखर्जी नगर, निरंकारी कॉलोनी, गांधी विहार, धीरपुर जैसे कई अन्य क्षेत्र शामिल हैं। सुरेश बाबू के अनुसार आज धीरपुर वेटलैंड पार्क 108 पक्षियों की प्रजातियों का घर भी है,जिनमें शिकारा, कॉपरस्मिथ बार्बर,रेड जैसे पक्षी शामिल हैं।

वर्ष 2017 में दलाई लामा ने लगाया था बरगद का पेड़

सुरेश बाबू ने बताया कि विश्वविद्यालय के शिक्षक, विद्यार्थी, कर्मचारी, और शोधकर्ताओं का इसमें योगदान है और सभी ने स्वेच्छा से यह कार्य किया है। पार्क में जामुन, बांस, और शहतूत समेत 90 से अधिक पेड़ों की प्रजातियां हैं। उन्होंने बताया कि वर्ष 2017 में दलाई लामा द्वारा यहां बरगद का पौधा लगाया गया था जो आज बड़े पेड़ के रूप में विकसित हो रहा है।

बनाए गए सात तालाब

सुरेश बाबू ने यह भी बताया कि जब परियोजना शुरू हुई तो यहां की भूमि में नमी बिल्कुल नहीं थी। विभिन्न प्रकार के समारोह आयोजनों व अन्य गतिविधियों के कारण मिट्टी की नमी समाप्त हो गई थी। इसलिए पानी के भंडारण के लिए तालाब बनाया गया। वेटलैंड के विस्तार के लिए छोटे बड़े सात तालाब बनाए गए जिसमें बारिश के दौरान जल का संचयन किया गया। इसके तहत एक साथ 50 हजार क्यूबिक लीटर पानी का भंडारण किया गया जिससे भूजल स्तर को बढ़ाने में मदद मिली।

> धीरपुर वेटलैंड परियोजना विश्वविद्यालय की एक प्रतिष्ठित परियोजना है जिसे डीडीए के सहयोग से किया जा रहा है। हालांकि परियोजना अभी भी विकास के चरण में है और इसके कुछ कार्य बाकी हैं। यह एक अनोखा मॉडल है जो वालेंटियर छात्रों, शोधकर्ताओं और स्थानीय समुदाय के सदस्यों की मदद से हासिल किया गया है। यह खुशी की बात है कि शोधकर्ताओं की टीम ने थोड़े समय में उत्कृष्ट परिणाम प्राप्त किए हैं।
>
> -अनु सिंह, कुलपति, अंबेडकर विश्वविद्यालय।

धीरपुर वेटलैंड पार्क में विचरण करते प्रवासी पक्षी ● सौजन्यः अंबेडकर विश्वविद्यालय